> कृष्ण भावना का एक दृष्टिकोण है। सभी उसको अपने हिसाब से समझने का प्रयत्न करते हैं। सबके जीवन में अलग-अलग अर्थ और भाव लिए कृष्ण उभरते हैं। तो कृष्ण को कृष्ण के हिसाब से समझने के लिए उनके अन्दर के गुणों को, भावों को पकड़ना और उसको शब्दों के धरातल से उठकर अनुभव के धरातल पर लाकर समझना होगा। तब उसे हम समझ पाएंगे।

आकर्षणमय आभा है कृष्ण

इस दुनिया में देवताओं की जो फेहरिस्त है उसमें सबसे ज्यादा उत्तम, सबसे ज्यादा पूजनीय, माननीय और सबके अन्दर बसने वाला एक नाम है- वो है श्रीकृष्ण का। लेकिन एक आभा ऐसी है, एक और ऐसा है जिसको इतने समय तक लोग याद रखते हैं। आज भी कलियुग के दौर में भी इतनी शिद्दत के साथ उनकी पूजा होती है, उनको पहचानते हैं, उनके साथ बैठते हैं, और बात भी करते हैं।

तो प्रश्न उठता है कि हम सभी उस आकर्षणमय आभा के करीब कब पहुंचेंगे? जन्माष्टमी तो सिर्फ एक त्योहार के रूप में हम सबके सामने है। लेकिन उसका मानवता के ऊपर प्रभाव और मानव मन उससे कैसे सुख पाए, उस बात को समझना अति आवश्यक है। आपको पता है कि आजकल जो सिर्फ चलता है वैज्ञानिक कहते हैं, मनोवैज्ञानिक भी कहते हैं कि हम सबके अन्दर एक भाव होता है- उदारता का, सबके लिए क्षमाशीलता का, सबके लिए अच्छा सोचने का, इतने सारे जो छोटे-छोटे भाव होते हैं तो ये भाव हमारे अन्दर का वातावरण बदल देते हैं। और अन्दर का वातावरण बदलते ही हमारा सूक्ष्म शरीर एक्टिव हो जाता है, सक्रिय हो जाता है। तो ये देखो कितना प्रायोगिक है, कितना प्रैक्टिकल है कि एक है अभ्यास से मैं सारी चीज़ें ठीक कर रहा हूँ, बहुत अच्छी बात है। लेकिन दूसरा है प्राकृतिक रूप से, नैचुरल तरीके से हमारे अन्दर ये सारी चीज़ें आ रही हैं। लेकिन जो श्रीकृष्ण थे, वो एक सम्पूर्ण मानव थे। जिसमें सर्व गुण, सर्व शक्तियां मौजूद थीं लेकिन वो उसको उन्होंने नैचुरल बनाया। कैसे बनाया होगा?

इस दुनिया में जब हम कुछ पाने की चाह रखते हैं, कोई इच्छा रखते हैं तो आप देखो सारी ऊर्जा उस इच्छा को पूरा करने में लग जाती है। क्योंकि जब हम इच्छा को पूरा करेंगे तो बहुत सारी बाधाएं भी आयेंगी, उसमें स्वार्थ भी आयेगा। आपका ऊपर-नीचे करने का मन भी करेगा। जब ये सारा शुरू हो जाता है तो समझो हम मनुष्य की स्थिति में हैं, मनुष्यता की स्थिति में जी रहे हैं। क्योंकि प्रकृति से बना हुआ शरीर है और जो भी इच्छा होगी वो प्राकृतिक ही तो होगी ना! लेकिन परमात्मा कहता है कि हम सबकी इच्छाएं ही हम सबको नीचे गिराती हैं, अवगुण लाती हैं।

तो कृष्ण का सबसे पहला जो कार्य था बनने का, कोई भी इच्छा है उसका ज्ञान ही नहीं था। पूरी तरह से एक निष्काम योगी की तरह जीवन था। और वो जीवन उन्होंने अभ्यास से नहीं, उसको समझकर बनाया। क्योंकि अभ्यास जब हम करना शुरू करते हैं किसी चीज़ का तो उसमें हमारा एफर्ट लगता है। लेकिन जैसे ही सब समझ में आता है कि हमारा शरीर यहाँ के कर्म, यहाँ की सारी चीज़ें यहीं रह जानी हैं। सिर्फ हम थोड़े दिन के लिए भूमिका निभाने आये हैं। हमारे अन्दर वो सारी बातें नैचुरल सी हो जाती हैं। जिस बात की समझ आकर्षण पैदा करती है और हमारा आभा चमकना शुरू हो जाता है। आप देखो बहुत सारे संत महात्मा जिनको इसदुनिया की जरूरत नहीं है, उनके पास भी और इतना अच्छा होता है, अच्छा लगता है। क्योंकि श्रीकृष्ण ने कितना काम किया होगा! कितना सोचा होगा, कितना गहराई से सोचा होगा कि आज भी जो आकर्षण में, वो आभामंडल हम सभी को उनको पूजने के लिए विवश करता है, उनको देखने के लिए विवश करता है।

तो ऐसा कृष्ण, ऐसी कृष्ण जन्माष्टमी हर साल एक त्योहार के रूप में, एक परम्परा के रूप में हम मनाते हैं। लेकिन अगर उसको जीवन में उतारना है तो सबसे पहले सारे गुणों को जो सबसे पहला गुण, सबसे बड़ा गुण उदारता का। सबको क्षमा करने का, आधार, उद्धार, सबके जीवन को अच्छा बनाने का, सबकी भावनाओं को श्रेष्ठ बनाने का, ये कार्य अगर हमारे जीवन में आना शुरू हो तो वही स्थिति आप अनुभव कर पाएंगे। तो अभी श्रीकृष्ण को पूजना नहीं है, उनके जैसा बनना है। आपने अगर कृष्ण लीला देखी हो तो उसमें इन्द्र की पूजा के लिए कृष्ण स्वयं मना कर रहे हैं। वो कह रहे हैं कि बाल लीला दिखाया है तो बाल लीला का अर्थ ही है कि आप अपने चैतन्य को अच्छा बनाओ। मूर्ति पूजा करने से क्या होता है! लेकिन जब चैतन्य को हम अच्छा बनायेंगे तो ऑटोमेटिकली पूरा जीवन उसी आभा के साथ जुड़ना शुरू हो जाएगा और अब कृष्ण नज़र आने लग जाएंगे। कृष्ण के औरे के साथ मैच करेंगे। तो हम सभी उस स्थिति में नहीं जाना चाहते? जाना तो चाहते हैं लेकिन उसका सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है, तो इसको समझना बहुत ज़रूरी है। नहीं तो एक त्योहार बनकर रह जाएगा।

स्वाधीनता से स्वमान का सफर

दुनिया में कहावत है कि सबसे भारी हमारा अहंकार है जिसको हम अभी तक ढो रहे हैं। और उसी के कारण हम अभी भी अधीन हैं, पराधीन हैं, स्वाधीन नहीं हैं। तो स्वाधीनता को समझने के लिए सबसे पहले अपने अहंकार के अनुभवों को छोड़ना होगा और हमें उस मुकाम को समझना होगा जहाँ हमें सुख मिले, पॉवर मिले, शक्ति मिले।

हम सभी को आज़ाद देश मिला, जिसको मिले हुए काफी समय हो गया। और उस आज़ाद देश में हम रहते हैं। बहुत सारी चीज़ों से हम बाहर के जो रूल्स और रेगुलेशन थे, नियम-कानून थे उनसे हम मुक्त हुए। हमारे अपने नियम-कानून में हम बंधे और उसी आधार से आगे हम बढ़ते रहे।

कहते हैं हमारे ऊपर कोई राज्य नहीं चला रहा, हम पूरी तरह से स्वाधीन हैं। लेकिन जब बाहर के लोगों से हमने अपने आपको छुटकारा दिला ही दिया है तो फिर भी क्या बचा है जो हमें परेशान कर रहा है। हम सभी को अगर कहीं से कुछ ठीक नहीं मिल रहा है तो हम उसका विरोध करते हैं लेकिन जब हमको अपने से कुछ ठीक न मिले तो उस समय हम क्या करेंगे? उस समय हम किसके पास जायेंगे? कौन हमारे लिए लड़ेगा? तो ये अब सोचने का विषय हुआ कि बाहर के लोगों की बात खत्म लेकिन अब अन्दर का शत्रु, अन्दर का दुश्मन जो हमको पूरी तरह से अपनी बेड़ियों में जकड़े हुए है। खुद के दुश्मन इसको कहा जाता है कि हम अपने ही संस्कारों के, जो तंग करने वाले संस्कार जिसमें कामना है, लोभ है, अहंकार है.., उसमें पूरी तरह से जकड़े हुए हैं हम सभी। और उनसे छूटना मुश्किल है, ऐसा लगता है। कारण एक है कि जब कभी हम बैठके अपने बारे में सोचते हैं, तो सोचते हैं कि ऐसी कौन-सी चीज़ रह गई जो हमको बांध रही है मुक्त नहीं होने दे रही। शारीरिक तंत्र और मानसिक तंत्र दोनों उलझा हुआ है। तो जो हमारा मन है वो इन सब बातों से बिल्कुल ही न्यारा नहीं है। इसलिए हम स्वाधीन होकर भी पराधीनता महसूस करते हैं।

अपनी फैमिली से, अपने घर से, परिवार से, सबके साथ रहते हुए भी जैसे लगता है कुछ है जो मुझे जकड़े हुए है, वो है हमारे विकार। जिनके वश होकर हम कोई कर्म करते हैं और बाद में उसका दुःख होता है। तो परमात्मा ने हम सबको मानसिक रूप से स्वाधीन होने का एक तरीका बताया और वो तरीका बताया कि अगर हम अपने आप को वो याद दिलाएं, जिससे अन्दर की जो गुलामी है वो छूट सकती है। उसे कहते हैं स्व को सम्मान देना। या स्व को मान देना, स्व को हमेशा अलर्ट रखना, जिसको हम आत्मा कहते हैं। स्व कहते हैं उसमें स्वाधीनता है, वहाँ पर स्वमान है, स्व का सम्मान है। तो जब मैं स्व को सम्मान देना शुरू करता हूँ, स्व को मतलब आत्मा के सारे गुण- ज्ञान, पवित्रता, शांति के आधार से अपने को अलर्ट रखता हूँ तो पराधीन करने वाले शत्रु हमसे बहुत दूर रहते हैं। और हम अपने घर में अन्दर के दुश्मनों से लड़ पाते हैं।

तो जब हम ऐसा करना शुरू करेंगे तो हम सबके अन्दर का जो गुलामी का संस्कार है, जो बंधनों में हम जकड़े हुए हैं वो हम उससे धीरे-धीरे परे और पार हो जायेंगे। तो शारीरिक रूप से भी स्वतंत्र और मानसिक रूप से भी स्वतंत्र। अब असली स्वाधीनता यहाँ पर आपको फील होगी। लगेगा कि स्व के अधीन अब सबकुछ है। आत्मा ने सबको अधीन कर लिया, सारे विकारों पर विजय प्राप्त कर ली। जब ऐसा करेंगे तो शायद सच्ची स्वतंत्रता की ओर बढ़ पाएंगे। नहीं तो अभी भी हम परतंत्र ही हैं। इसीलिए कहा जाता है कि बाहर के लोगों को जीतना तो बहुत आसान है, लेकिन अन्दर के शत्रु को जीतने के लिए बहुत मुश्किल, बहुत मुश्किल लगता है।

तो क्या हम इस स्वतंत्रता दिवस पर अपने को अन्दर से स्वतंत्र करना नहीं चाहेंगे! चाहेंगे तो, अपनी स्वाधीनता को परमात्मा के आधार से जगाओ। स्व के अधीन सारे विकारों को करो। फिर देखो सब आपके सामने नतमस्तक होकर आपसे विदाई लेंगे और चले जायेंगे।